© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

मनोवृत्ति एवं प्रदूषण की समस्याएँ

Dheerendra Kumar Singh

यूजीसी नेट–जेआरएफ (शिक्षाशास्त्र),
शोध छात्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्व विद्यालय फैजाबाद

आज पृथ्वी अनेक समस्याओं से जूझ रही है। इसमें प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक समस्या है। आज प्रदूषण से पृथ्वी का कोई भी आग अछूता नहीं रहा है। यहाँ कि अंतरिक्ष भी प्रदूषण के गिरफ्त में है, जो इलेक्ट्रानिक कचरा के रूप में वायुमण्डल में फैला हुआ है। प्रदूषण के कई रूप, जैसे–वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण इत्यादि हमारे सामने मौजूद है।

समय में साथ प्रदूषण की गति बढ़ती ही जा रही है इस बढ़ते प्रदूषण ने मानव स्वास्थ्य और विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है, जिससे मानव अनेक विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त होता चला जा रहा है साथ ही साथ अन्य जीव भी लुप्त होते जा रहे हैं। इस कारण पारिस्थतिकी असंतुलन उत्पन्न हो गया है।

दुनियाभर में बढ़ते प्रदूषण पर चिंता अवश्य व्यक्त की जा रही है, किन्तु उसके समाधान के मूलभूत पहलू की उपेक्षा हो रही है। अब बताने और समझाने की जरूरत नहीं रह गई। धरती के मूल स्वरूप से छेडछाड़ का नतीजा हम सबको दिख रहा है। जहाँ कुछ साल पहले घने जंगल हुआ करते थे, वहाँ आज कंक्रीट की अ्टटालिकाएं खड़ी हो चुकी है। जहाँ कभी पानी से लबालब भरे ताल, झीलें और अन्य जल स्रोत हुआ करते थे, आज अमूमन उनका अस्तित्व ही नहीं है। जो हैं भी वे सूखे उजाड़ पड़े हैं। कई नदियाँ जिसकी अविरल धारा हमारी सभ्यता को सजीवता प्रदान करती है, उनका अस्तित्व भी खतरे में पड़ गया है। क्या हमारी सभ्यता खतरे में नहीं है? प्रदूषण ने सामाजिक समस्यायें उत्पन्न की हैं।

मानव का स्वार्थ लगातार बढ़ता जा रहा है। भौतिक सुख की बढ़ती भूख के कारण आधुनिकता और प्रगतिशीलता के नाम पर प्रकृति के अंधाधुंध शोषण के कारण पर्यावरण और विकास का संतुलन डगमगा गया है। इस तरह के उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण मनुष्य के विचारधारा में इतना अधिक बदलाव आ गया है कि भविष्य की जैसे मानव की कोई चिंता नही हैं। टिकाऊ की चुनौती आज भी हमारे सामने बनी हुई है

प्रदूषण की समस्या का हल सिर्फ भाषणों, फिल्मों, किताबों और लेखों से ही नहीं हो सकता, बल्कि हम इंसान को धरती के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी, तभी कुछ ठोस नजर आ सकेगा। अब वक्त की मांग है कि हर इंसान पर्यावरणीय अनुकूल जीवन शैली का अपनायें, और पर्यावरण को दुरूस्त रखने वाली नीतियों का समर्थन करें।

पर्यावरण प्रदूषण–डॉ0 रवीन्द्र कुमार

पर्यावरण प्रदूषण– निरन्जन घाटे

प्रदूषण मुक्त पर्यावरण– रचना भोला थामिनी